

12/11/24 पत्रावालिपेको दुर। उरुपस अहापनिव

बार बार भक्ति लज्जति रि। बाबूद अलज
अहापनिव। अत्र पत्रावालि अरु घेती अरु
शजरी स्वारिज की जाती है।

